अध्याय-पंचम

शोध सार, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय – पंचम

शोधसार, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 भूमिका–

प्राथमिक शिक्षा व्यक्ति की बुनियादी आवश्यकता है जो उसे संपूर्ण या पूर्ण रूप से मनुष्य बनाने में सहयोग देती है, उसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करती है। यह शिक्षित जनशक्ति ही देश का वर्तमान व भविष्य सँवारने का बीड़ा उठा सकती है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि शिक्षा का कार्य पुरानी परिपाटी को नई दिशा प्रदान कर नवीन आदर्शो की स्थापना करना है।

मानव प्रतिभा के विकास में शिक्षा की अहम् भूमिका है और शिक्षातंत्र की प्रभावोत्पादकता पूर्णतः शिक्षकों पर आधारित है, इसीलिए शिक्षण के विविध आयामों में शिक्षक शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। व्यक्ति, बालक के समग्र विकास में शिक्षक उस धुरी के सदृश होता है जिसका प्रभाव बालक के व्यक्तित्व पर स्पष्ट परिलक्षित होता हैं। सच्चे एवं योग्य गुरू की आवश्यकता तो प्राचीन काल से ही मानी जाती आयी है। श्रेष्ठ गुरू के संपर्क में प्राप्त शिक्षा ज्ञान के प्रकाश को निरंतर बढ़ाती रही है और उसके विपरीत स्थिति अज्ञानता के गर्त में ले जाती है। हमारा प्राचीन इतिहास भी इस बात की पृष्टि करता है कि जितने भी धर्म सुधारक या समाज सुधारक जैसे ईशा, गांधी, बुद्ध, महम्मद, चैतन्य, कबीर, हुए वे मूल अर्थ में सच्चे शिक्षक थें, जिनके संदेश मानव जाति के कल्याण का एक अंतरंग हिस्सा है।

राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका प्राचीन काल से ही महत्पवपूर्ण देखी गयी है और भविष्य में भी देखी जाती रहेंगी। इससे स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक शिक्षक के महत्व को नकारा नहीं जा

सकता। शिक्षा की राष्ट्रीय नीति के अन्तर्गत भी शिक्षक की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हुए स्पष्ट रूप से कहा गया है कि किसी भी समाज में अध्यापकों के स्तर से उसकी सांस्कृतिक,सामाजिक दृष्टि का पता लगया जा सकता है। कहा गया है कि कोई भी राष्ट्र अपने अध्यापकों के स्तर से ऊपर कभी नहीं उठ सकता।

शिक्षक को शिक्षा-प्रक्रिया का प्रमुख बिन्दु मानते हुए, शिक्षक की विभिन्न दशाओं को, सेवा शर्तो को उन्नत बनाने के प्रयास करने चाहिए। शिक्षा जगत से जुड़े 'शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम' में भी गुणात्मक सुधार लाने की आवश्यकता है। सरकार व समाज को ऐसी परिस्थितियाँ बनानी चाहिए जिससे अध्यापकों को निर्माण और सृजन की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिले, अध्यापन व्यवसाय के प्रति वे उन्मुख हो और इस कार्य से वे परम संतोष प्राप्त करें। ऐसे माहौल के लिए शिक्षकों की स्वायतता अत्यंत आवश्यक है। जितनी आजादी, इज्जत और लचीलापन शिक्षार्थी को चाहिए उतना ही शिक्षक को भी। फिलहाल तो प्रशासनिक ऊँच-नीच एवं नियंत्रण, परिक्षाएँ, पाठ्यचर्या सुधार का केन्द्रीयकृत नियोजन ये सभी शिक्षक और मुख्य शिक्षक की स्वायतता पर तमाम प्रतिबंध लगाते हैं। कही पाठ्यचर्या में खुलेपन का अवसर मिलता भी है तब भी शिक्षक इतने आत्मविश्वासी नहीं हो पाते कि वे अपनी स्वायतता का ऐसे उपयोग कर लें कि प्रशासन भी अलग तरह से काम करने के कारण खफा न हो। इसीलिए यह जरूरी है कि उनको विकल्प चुनने में और स्वायतता को महसूस करने में समर्थन दिया जाए। शिक्षक न केवल आदेश और सूचना प्राप्त करें, बल्कि ऊपर बैठे लोगों द्वारा उन निर्णयों को लेते समय शिक्षकों की आवाज भी सुनी जाए। जिनसे कक्षा का तात्कालिक जीवन और स्कूल की संस्कृति प्रभावित होते हैं। एक ऐसे वातावरण के

विकास की जरूरत हैं, जिसमें अध्यापकों में मिलजूल कर काम करने की भावना का विकास हो, साथ ही विवादों के निपटारे का भी कोई तरीका हो। शिक्षकों की ऐसी तैयारी जरूरी है कि वे बच्चों का ख्याल कर सकें और उनके साथ रहना पसंद करें। समाज के प्रति अपना दायित्व समझे और बेहतर विश्व के लिए काम करें।

5.2 शोधसार–

शोध का शीर्षक–

प्रस्तुत शोध समस्या का शीर्षक **"प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का उनके अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव–एक अध्ययन है।"**

शोध के चर –

अनुसंधान कार्य के लिए चर के रूप में निम्नानुसार शब्दावली प्रयुक्त है।

- **स्वतंत्र चर** – व्यावसायिक संतुष्टि
- **आश्रित चर** – अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव
- उपचर – लिंग, क्षेत्र, योग्यता

शोध के उद्देश्य–

1. प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि स्तर का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि स्तर का उनके अध्ययन–अध्यापन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. प्राथमिक शाला के शिक्षकों की क्षेत्र के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

4. प्राथमिक शाला के शिक्षकों की लिंग के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

5. प्राथमिक शाला के शिक्षकों की योग्यता के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि का उनके अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ-

1. प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

2. प्राथमिक शाला के शिक्षकों की लिंग के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।

3. प्राथमिक शाला के शिक्षकों की क्षेत्र के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन - अध्यापन पर प्रभाव के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।

4. प्राथमिक शाला के शिक्षकों की योग्यता के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव के मध्यम सार्थक अंतर नहीं है।

5. प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि स्तर का विश्लेषण।

न्यादर्श चयन प्रक्रिया-

इस अनुसंधान कार्य में अनुसंधानकर्ता ने न्यादर्श का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया है। **गुजरात के साबरकांठा जिले** के तीन तहसील के 24 प्राथमिक शालाओं में से 120 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। इनमें 60 महिला शिक्षक एवं 60 पुरुष शिक्षक शामिल किये गये हैं।

प्रदत्तों के संकलन के लिए प्रयुक्त उपकरण–

अनुसंधानकर्ता ने प्रदत्तों के संकलन हेतु **डॉ. एस.के. सक्सेना** द्वारा निर्मित प्रमाणिकृत 'शिक्षक कृत्य संतुष्टि मापनी' जो उच्च माध्यमिक एवं इंटरमीड़ियेट कॉलेज के अध्यापकों के लिए निर्मित है उस पर से शोधकर्ता ने निर्देशक एवं विशेषज्ञों के परामर्श से प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के लिए मूल मापनी से निर्माण किया है। इसके साथ शोधकर्ता ने दूसरा उपकरण जो 'अध्ययन–अध्यापन प्रभाव मापनी' का प्रयोग किया है, वह शोधकर्ता की निर्देशक एवं विशेषज्ञों के परामर्श से स्वनिर्मित है। इस तरह यह दो उपकरणों का उपयोग शोधकर्ता ने प्रदत्तों के संकलन के लिए किया है।

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि–

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि एवं उसका विश्लेषण, व्याख्या चतुर्थ अध्याय में की गई है। चतुर्थ अध्याय में शोध उद्देश्यों के आधार पर शून्य परिकल्पनाओं की सार्थकता का अध्ययन किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक–विचलन, 'टी' अनुपात, 'एफ'–अनुपात, सह–संबंध गुणांक का उपयोग किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि का वर्णन निम्न तालिका क्रमांक 5.2.1 में हैं।

क्र.	परिकल्पना क्रमांक	तालिका क्रमांक	प्रयुक्त सांख्यिकी	प्राप्त परिणाम	प्राप्त निष्कर्ष
1.	1	4.2.1	सह संबंध गुणांक	0.157	NS
2.	2	4.2.2	'टी' अनुपात	0.063 0.731	NS
3.	3	4.2.3	'टी' अनुपात	0.696 1.363	NS
4.	4	4.2.4	प्रसरण विश्लेषण	0.213 0.096	NS
5.	5	4.2.5	प्रतिशत	95.00 5.00	बहुत अच्छा अच्छा

0.05 स्तर पर सार्थकता नहीं है।

5.3 निष्कर्ष –

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रदत्तों का विश्लेषण तथा विवेचना करने के पश्चात् कुछ संप्रतियाँ सामने आई जिनके आधार पर निकाले गए निष्कर्ष इस प्रकार हैः–

1. प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और उनके अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव के मध्य सार्थक संबंध नहीं होता है।
2. प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव पर लिंग का कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
3. प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव पर क्षेत्र का कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
4. प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव पर योग्यता का कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

5. प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि स्तर का विश्लेषण करते पाया गया की सभी शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट है जिसमें 95 प्रतिशत शिक्षक की श्रेणी 'बहुत अच्छी' है जबकि 5 प्रतिशत शिक्षक की श्रेणी 'अच्छी' हैं

5.4 सुझाव–

1. योग्य शिक्षकों को राष्ट्रीय, राज्य एवं जिला स्तर पर सम्मान देने के लिए पुरस्कार देकर सम्मान करना चाहिए।
2. शिक्षकों की ऐसी तैयारी जरूरी है कि वे सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संदर्भो में बच्चों को समझ सकें।
3. शिक्षक की शिक्षा को स्कूली व्यवस्था की उभरती मांगों के प्रति अधिक संवेदनशील होना चाहिए।
4. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सिद्धान्त और व्यवहार दोनों का समन्वित रूप होना चाहिए।
5. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में साल में एक बार मूल्यांकन के चलन की जगह उसे सतत प्रक्रियागत गतिविधि के रूप में शामिल किया जाना चाहिए।
6. शिक्षकों की चयन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण बदलाव लाने की अत्यंत आवश्यकता है।
7. शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि को टिकाये रखने एवं उसमें बढ़ोत्तरी के लिए शिक्षकों का वेतन एवं सुविधाएँ उनके जीवन–यापन के सप्रमाण होनी चाहिए।
8. वर्तमान मँहगाई के युग में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के वेतन में सुधार लाना चाहिए ताकि वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें और संतुष्ट जीवन जी सकें।
9. शिक्षकों के प्रदर्शन को सुधारने के लिए ढ़ाँचागत और भौतिक सामग्री की न्यूनतम उपलब्धता और दैनिक योजना को लचीला बनाने की आवश्यकता है।

10. शिक्षकों को अन्य कार्यभार न देकर उनके अध्ययन के लिए योग्य प्रशिक्षण–कार्यक्रमों का आयोजन करने में उनके अध्यापन की प्रभावशीलता को बढ़ाया जा सकता है।

11. शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के कार्यक्रमों का संतोषकारक आयोजन होना चाहिए कि वह अपनी शिक्षण प्रक्रिया में उसका उपयोग कर सकें।

12. शिक्षकों एवं स्कूल के मूल्यांकन की प्रक्रिया में सुधार ला कर हरेक स्कूल का पर्यवेक्षण सही प्रकार से करने की जरूरत है।

5.5 भावी शोध हेतु सुझाव–

1. प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और शिक्षण प्रभाविता का अध्ययन किया जा सकता है।
2. सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों तथा सेवारत् शिक्षकों की शिक्षक कृत्य अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. आदिवासी आश्रम शालाओं तथा गैर–सरकारी शालाओं के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन किया जा सकता है।
4. शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक शाला के शिक्षक–शिक्षिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
5. माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन किया जा सकता है।
6. शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि, अध्यापन प्रभावशीलता विद्यालय की असरकारता पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन किया जा सकता है।
7. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समस्याओं के आधार पर उनकी कार्यसंतुष्टि का अध्ययन किया जा सकता है।